कॉय और कोह्ला के बीज
लाइबेरिया की लोककथा

कॉय और कोह्ला के बीज

लाइबेरिया की लोककथा

लाइबेरिया के एक गाँव में एक दिन एक मुखिया, चीफ ओहगूमेफू, का निधन हो गया. उसकी अन्त्येष्टि के बाद एक वृद्ध ज्ञानी पुरुष ने मुखिया की संपत्ति का बटवारा कर दिया. उसके तीन बड़े बेटों को सारी गायें और भेड़ें और हाथी-दाँत गिन कर उस वृद्ध ने बाँट दिये.

लेकिन उस समय सबसे छोटा बेटा, कॉय, शिकार करने गया हुआ था. उसे घर लौटने में थोड़ी देर हो गई. वह तभी घर पहुँचा जब उसके तीनों भाई अपने हाथी-दाँत और जानवर लेकर झटपट वहाँ से जा रहे थे.
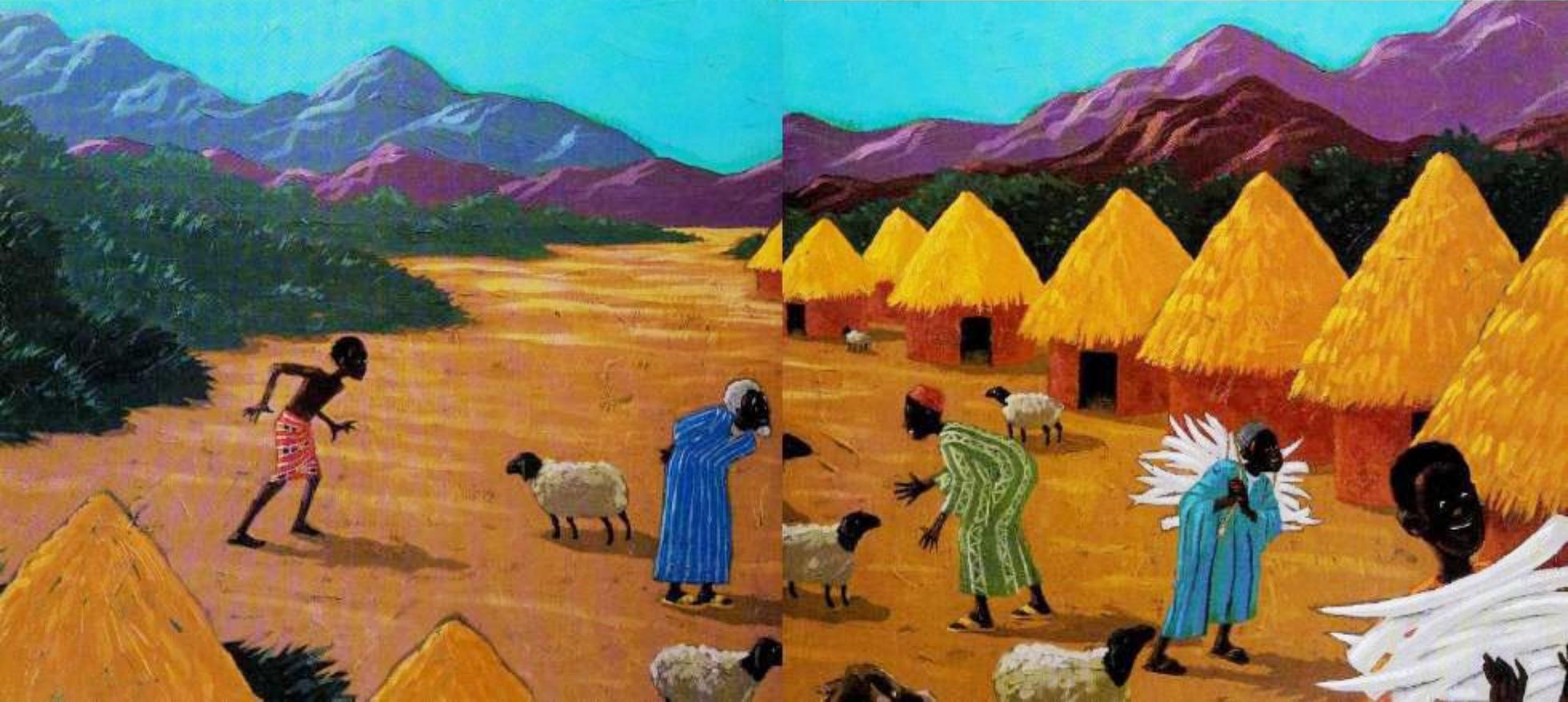
“महाशय,” उसने कहा, “मेरा भाग कहाँ है?”

तब वृद्ध ज्ञानी ने कहा, “तुम ने बहुत देर कर दी. जो बटवारा हो चुका है उसे मैं अब बदल नहीं सकता.” उसने इधर-उधर देखा और उसकी दृष्टि एक छोटे से कोहला के पेड़ पर पड़ी. उसने वह पेड़ कॉय को दे दिया.

“आप मेरे साथ छल क्यों कर रहे हैं?” कॉय ने रोते हुए कहा. “मैं भी मुखिया का बेटा हूँ!”

वृद्ध ज्ञानी पुरुष ने कॉय को देर तक घूर कर देखा-लेकिन अपना मुँह नहीं खोला. फिर *रैस, रैस, रैस* रास्ते पर सैंडल रगड़ते हुए वहाँ से चला गया.
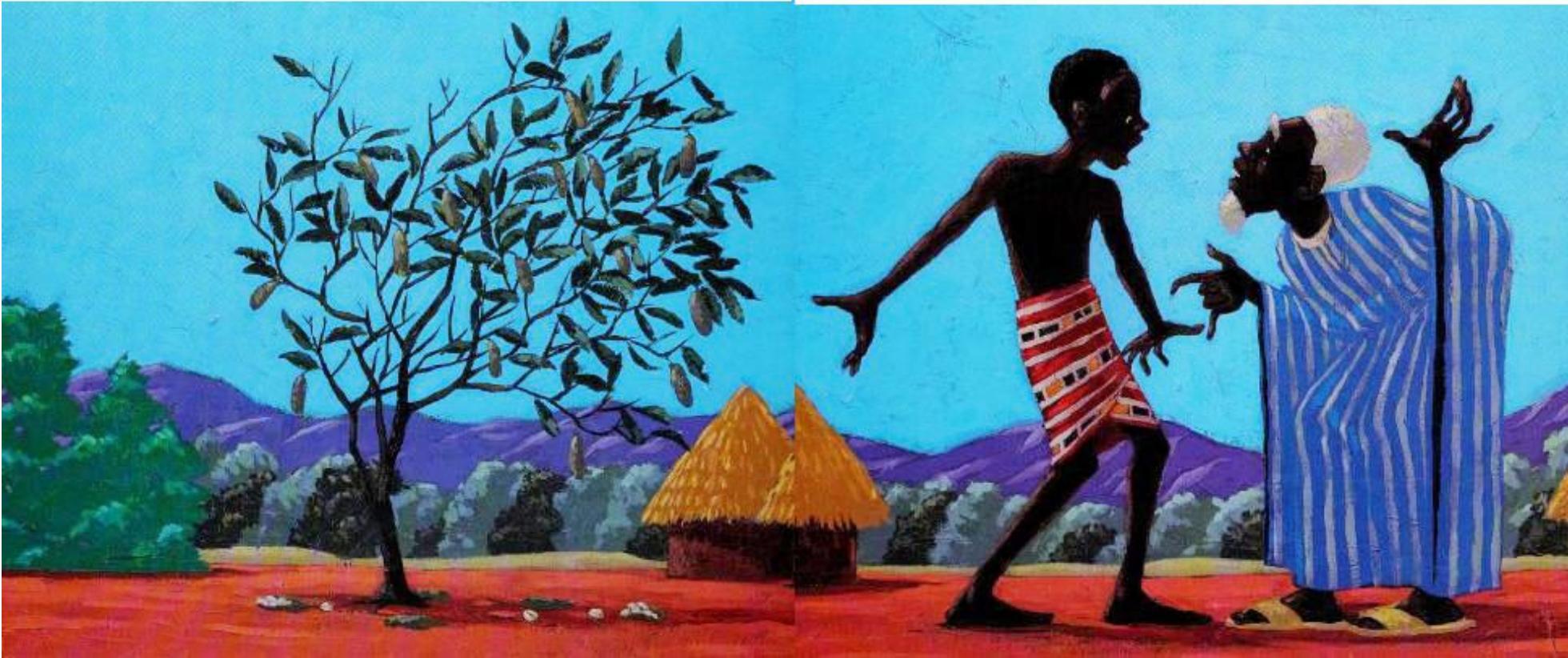
कॉय बैठ कर अपनी दुर्दशा पर विचार करने लगा. लेकिन शीघ्र ही वह उछल कर खड़ा हो गया और बोला, “ऐसे बैठे रहने से मेरी दशा न बदलेगी, कुछ करने से ही बदलेगी. घर के बाहर एक विशाल संसार है और मैं उसकी खोज करूँगा.” उसने अपने पेड़ पर लगे सारे बीज तोड़ लिए और उन्हें एक चटाई में बाँध लिया. चटाई को एक किन्जा के साथ बाँध दिया और उसे अपनी पीठ पर उठा लिया.

कॉय उस रास्ते पर चल पड़ा जो गाँव के उत्तर की ओर जाता था. वह अधिक दूर न गया था कि उसने एक साँप देखा जो उस रास्ते पर रेंगते हुए जा रहा था, *वासा-वासू, वासा-वासू*. बीच-बीच में रुक कर साँप पेड़ों की ओर देख रहा था.

कॉय ने पूछा, “मित्र, तुम पेड़ों में क्या ढूँढ़ रहे हो?”

“कोह्ला का पेड़,” साँप ने उत्तर दिया. “ मेरी माँ बीमार है और उसे कोह्ला के बीज की बनी दवाई चाहिए.”

कॉय ने कहा, “मैं तुम्हें कोह्ला के बीज दे सकता हूँ.” उसने किन्जा के साथ बँधी चटाई में से एक बीज निकाल कर साँप को दिया.

“धन्यवाद,” साँप ने कहा. “मुझे आशा है कि किसी दिन मैं तुम्हारी सहायता कर सकूँगा.” इतना कह कर साँप रेंगता हुआ चला गया.

कॉय चलता रहा, चलता रहा. कुछ देर बाद उसे चींटियों की सेना दिखाई दी. चार चींटियाँ एक कतार में आगे-आगे चल रही थीं और हर एक के पीछे चींटियों की एक अंतहीन पंक्ति थी. चींटियों के सेनापति ने नन्हीं आवाज़ में कहा, "श्रीमान, क्या आप जानते हैं कि हमें कोह्ला का पेड़ कहाँ मिलेगा? हमने जंगली दानव की टोकरी में रखे बीज खा लिए थे और अगर वह बीज तुरंत, तुरंत, बिलकुल तुरंत टोकरी में हम ने वापस नहीं रखे तो दानव हम सब को कुचल डालेगा!"

"तुम्हें कितने बीज चाहिए?" कॉय ने पूछा.

"जितनी उसके हाथों और पाँवों की अंगुलियाँ हैं." चींटी ने अपने पाँव गिने और कहा, "छह."

"लेकिन जंगल का दानव एक चींटी नहीं है," कॉय ने कहा. "वह एक आदमी है!" कॉय ने दस बीज हाथों की और दस पाँव की अंगुलियों के लिए चींटियों को दिए.

"धन्यवाद," वह चिल्लाई और अपना भारी बोझ उठा कर धीरे-धीरे सब चींटियाँ चल दीं, *उह, उह, उह.*
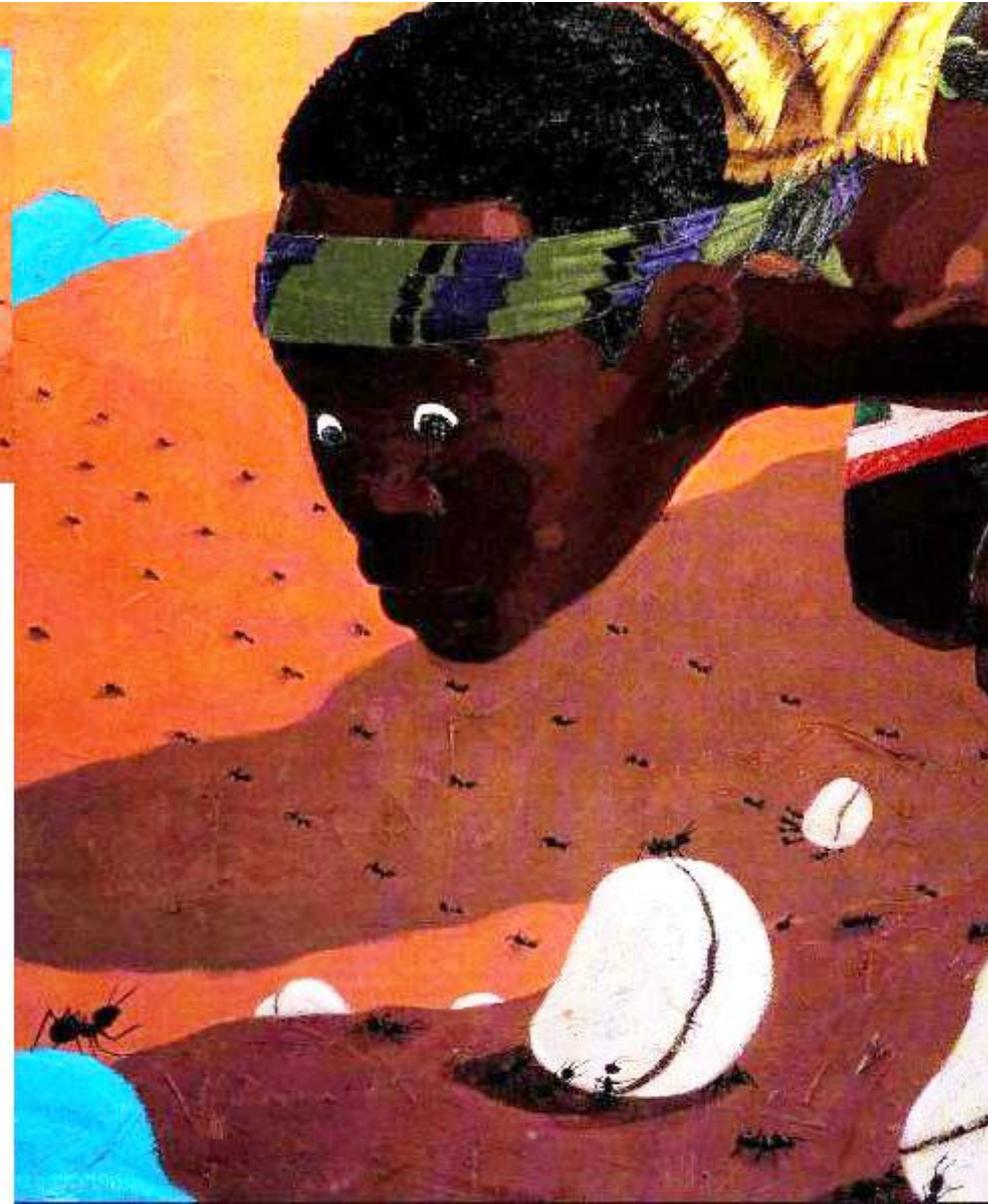
कई दिनों के बाद कॉए एक पहाड़ के निकट पहुँचा. एक घुमावदार रास्ता पहाड़ के ऊपर की ओर जा रहा था. "ओहो," वह बोला, "मैं इस पहाड़ पर चढ़ना नहीं चाहता. लेकिन अगर मैं नहीं चढ़ा तो मुझे कभी पता न चलेगा कि इसके दूसरी ओर क्या है." थकावट दूर करने के लिए वह पेड़ के नीचे लेट कर सो गया.

जल्दी ही किसी के रोने की आवाज़ सुन कर वह उठ गया, *वाआ, वाआ!* उसने आसपास देखा. उसे एक बड़ा मगरमच्छ दिखाई दिया जो रास्ते में लेटा ज़ार-ज़ार आँसू बहा रहा था.

"ओह, बेचारे मगरमच्छ!" कॉय चिल्लाया. "तुम किस भयंकर मुसीबत में फँस गए हो?"

"मैं वर्षा करने वाले ओझा का कुत्ता खा गया!" मगरमच्छ ने कहा. "अब अगर सूर्यास्त से पहले मैंने उसका मूल्य नहीं चुकाया तो वह मुझ पर वज्रपात करेगा." फिर उसने दुःखी मन से कहा, "अगर मैं जानता कि वह किस का कुत्ता था तो मैं किसी और का कुत्ता खा लेता."

"ओझा को क्या मूल्य देना है?" कॉय ने पूछा.

"एक बोरा कोहला के बीज."

"अपने आँसू साफ कर लो," कॉय ने कहा. "देखो, इसमें इतने बीज हैं कि तुम दो कुत्तों का मूल्य चुका सकते हो!" उसने चटाई का एक कोना खोल कर दिखाया कि उसके अंदर क्या था. "यह बीज मैं तुम्हें दे रहा हूँ." इतना कह कर उसने किन्जा मगरमच्छ की पीठ पर बाँध दिया.

"धन्यवाद," मगरमच्छ ने मुस्कराते हुए कहा. फिर भारी क़दमों से चलते और ज़मीन पर पूँछ पटकते हुए वह चला गया, *बिलांग-बिलैंग, बिलांग-बिलैंग.*
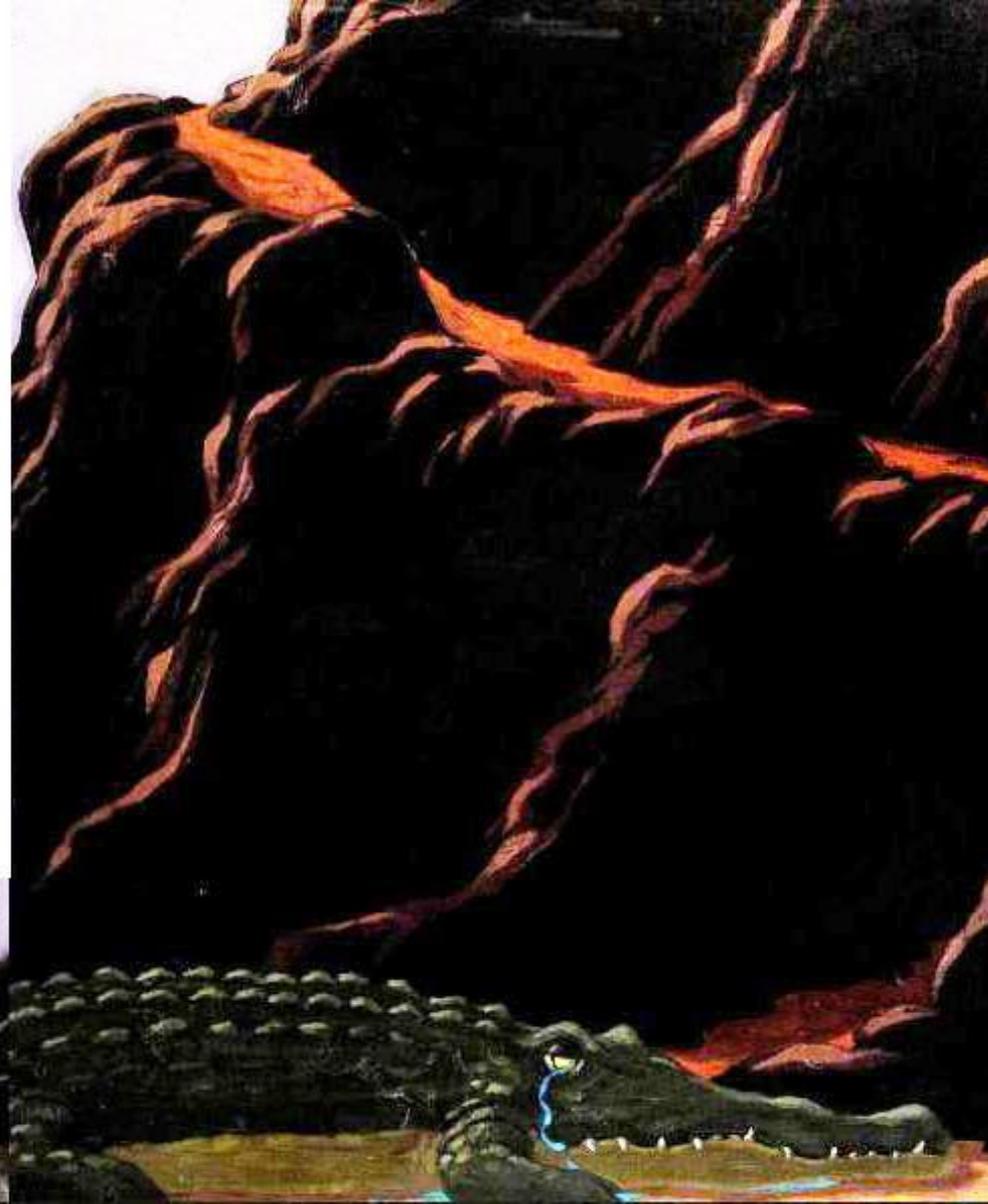
अपने बोझ से झुटकारा पाकर कॉय प्रसन्न था और उत्साह के साथ पहाड़ पर चढ़ने लगा. वह पहाड़ के दूसरी तरफ आ गया. फिर वह एक गाँव में पहुँच गया.

गाँव के फाटक पर पहरेदार ने उसे रोक दिया. "चीफ फूलिह्कोह्ली के प्रदेश में कौन प्रवेश कर रहा है?" उसने पूछा.

कॉय ने अभी भी अपनी शिकार करने की गंदी सी पोशाक पहन रखी थी और उसका बदन रास्ते की धूल से भरा हुआ था. फिर भी उसने सीधे तन कर कहा, "मैं कॉय हूँ, महान चीफ ओह्गूमेफू का पुत्र."

पहरेदार ने उसे ध्यान से देखा. "हम्म्म, कंगाल हो पर बात बड़ी कर रहे हो," उसने कहा, लेकिन अपने चीफ को बुलाने के लिए वह चला गया.

"मुझे लगता है कि तुम मेरी सुंदर बेटी की हाथ और मेरा आधा प्रदेश जीतने आए हो," चीफ फूलिह्कोह्ली ने कर्कश आवाज़ में कहा, क्योंकि दूर-दूर से विवाह-अभिलाषी वहाँ आ रहे थे.

कॉय आश्चर्यचकित हो गया. उसे लगा उसकी झोली में पका हुआ आलूचा अपने-आप गिर गया था. "बेशक, मैं यही सोच कर आया हूँ." उसने कहा.

"यह पुरस्कार पाने के लिए तुम्हें अपनी योग्यता प्रमाणित करनी होगी," चीफ ने कहा.
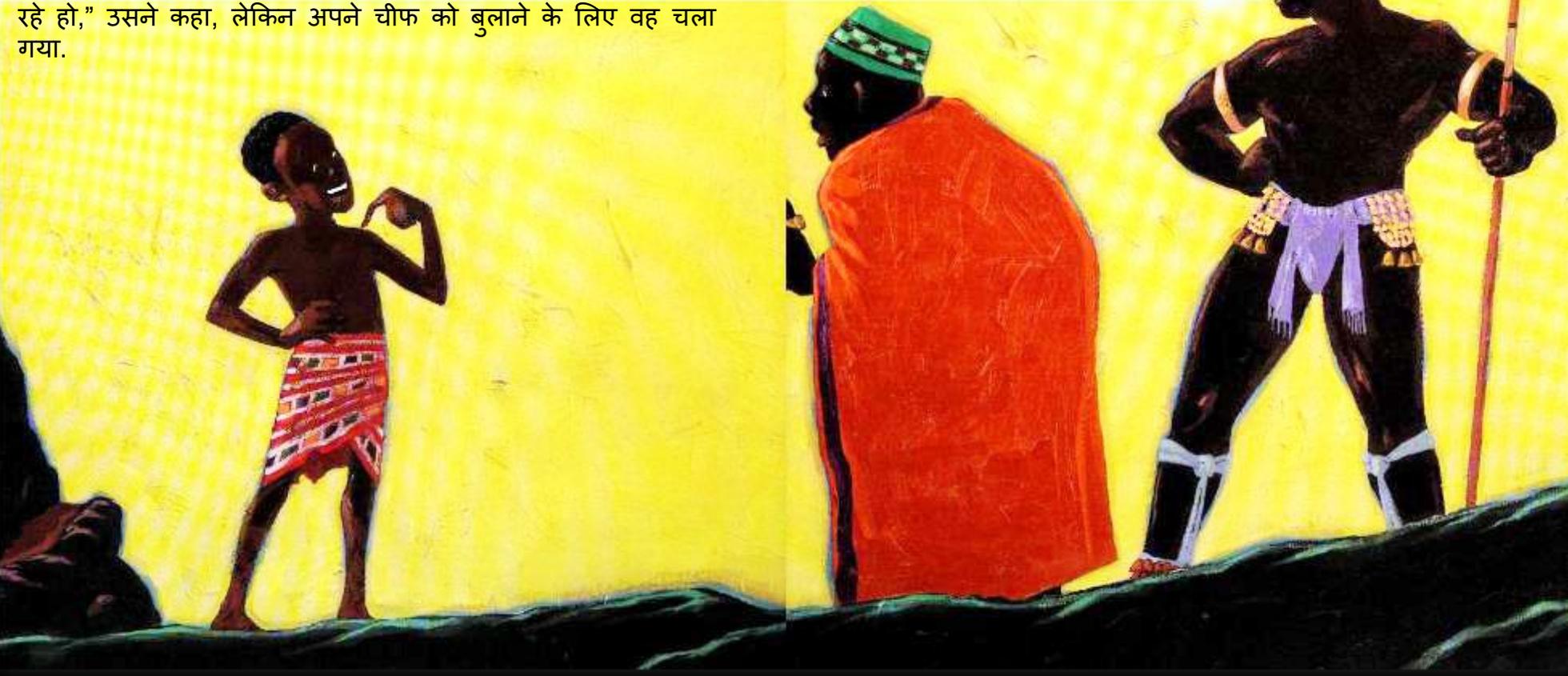
"सबसे पहले तुम्हें वह खजूर का पेड़ इस तरह काटना होगा कि वह जंगल की दिशा में गिरे," और उसने एक पेड़ की ओर संकेत किया जो गाँव की ओर अधिक झुका हुआ था.

पेड़ देख कर कॉय थरथरा गया. लेकिन उसने सिर्फ इतना कहा, "मैं प्रयास करूँगा."

कॉय को एक कुल्हाड़ी दी गई और उसे अकेला छोड़ दिया गया.

शीघ्र ही कॉय ने एक जानी-पहचानी आवाज़ सुनी-*वासा-वासू, वासा-वासू*. उसकी ओर वही साँप आ रहा था जिसकी उसने सहायता की थी.

"मैं बहुत दूर से तुम्हारा पीछा करता आ रहा हूँ," साँप ने कहा. "कोहला के बीज ने मेरी माँ को ठीक कर दिया. उसने तुम्हें धन्यवाद कहा है."

"तुम्हारा आभार जो यह बताने के लिए तुम यहाँ आए," कॉय ने कहा. "लेकिन अब मैं कठिनाई में हूँ. वह खजूर का पेड़ देख रहे हो? मुझे उसे इस तरह काटना है कि वह जंगल की ओर गिरे."

"यह तो असंभव है." साँप चिल्लाया. "यह उलटी दिशा में झुका हुआ है."

"मैं जानता हूँ," कॉय ने कहा.

"मैं अपने संबंधी, अजगरों को लेकर आता हूँ," साँप बोला. "शायद वह मदद कर पायें."

चाँद के निकलते ही तीन अजगरों को साथ लेकर साँप लौट आया. विशाल अजगरों ने खजूर के पेड़ के इर्द-गिर्द अपनी गरदनें लपेट लीं और पूँछों से निकट के एक आम के पेड़ को जकड़ लिया. इस तरह उन्होंने खजूर को मज़बूती से पकड़े रखा और कॉय उसे काटता रहा, *पिम-पैन, पिम-पैन, पिम-पैन*. जब खजूर के तने का अंतिम रेशा टूटा तो अजगरों ने पेड़ को उठा कर जंगल की ओर गिरा दिया, *धड़ाम*.
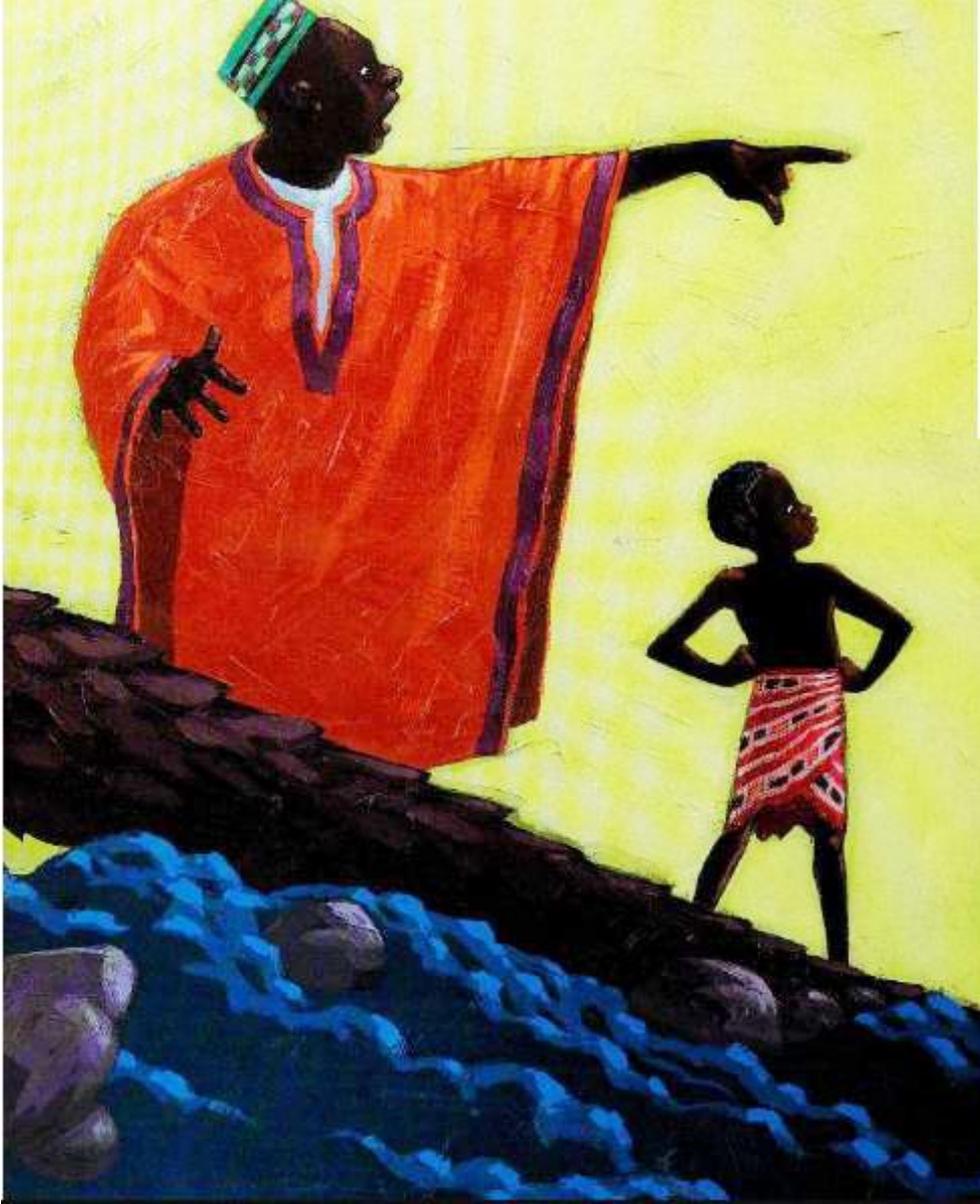
अगली सुबह चीफ फूलिहकोहली ने गिरा हुआ खजूर का पेड़ देखा जिसके पास कॉय बड़े गर्व के साथ खड़ा था. "युवक," उसने कहा, "तुम ने अच्छा काम किया है...अब तक. लेकिन तुम्हारे लिए एक और चुनौती है. हम ने एक बड़े टोकरे में भरे चावल एक खेत में बिखरा दिए हैं और रात के अँधेरे में चावल के सब दाने उठा कर तुम्हें इकट्ठे करने हैं."

उस रात कॉय एक टोकरा लेकर खेत में आ गया. जब चावल चुनने के लिए वह हाथ में मिट्टी लेकर छान रहा था तो एक चींटी उसकी हथेली पर चढ़ आई.

"श्रीमान," चींटी ने कहा, "क्या आप वही नहीं हैं जिसने हमें कोह्ला के बीज दिए थे जब हमें उनकी आवश्यकता थी?"

"शायद," कॉय ने कहा.

"कोह्ला के उन बीजों ने हमें जंगल के दानव से बचाया," चींटी बोली.

"अच्छा," कॉय ने कहा, "अब शायद तुम मेरी मदद कर सकती हो. सुबह होने से पहले मुझे यह सारे चावल चुन कर इकट्ठे करने हैं."

"मेरे साथी यह काम करेंगे," चींटी ने कहा. और शीघ्र ही ज़मीन पर चींटियों की सेना फैल गईं. सब चींटियाँ चावल के दाने उठा रही थीं. *टिक, टिक, टिक,* छोटे-छोटे दानों की टोकरे में वर्षा होने लगी. थोड़ी ही देर में खेत साफ हो गया.
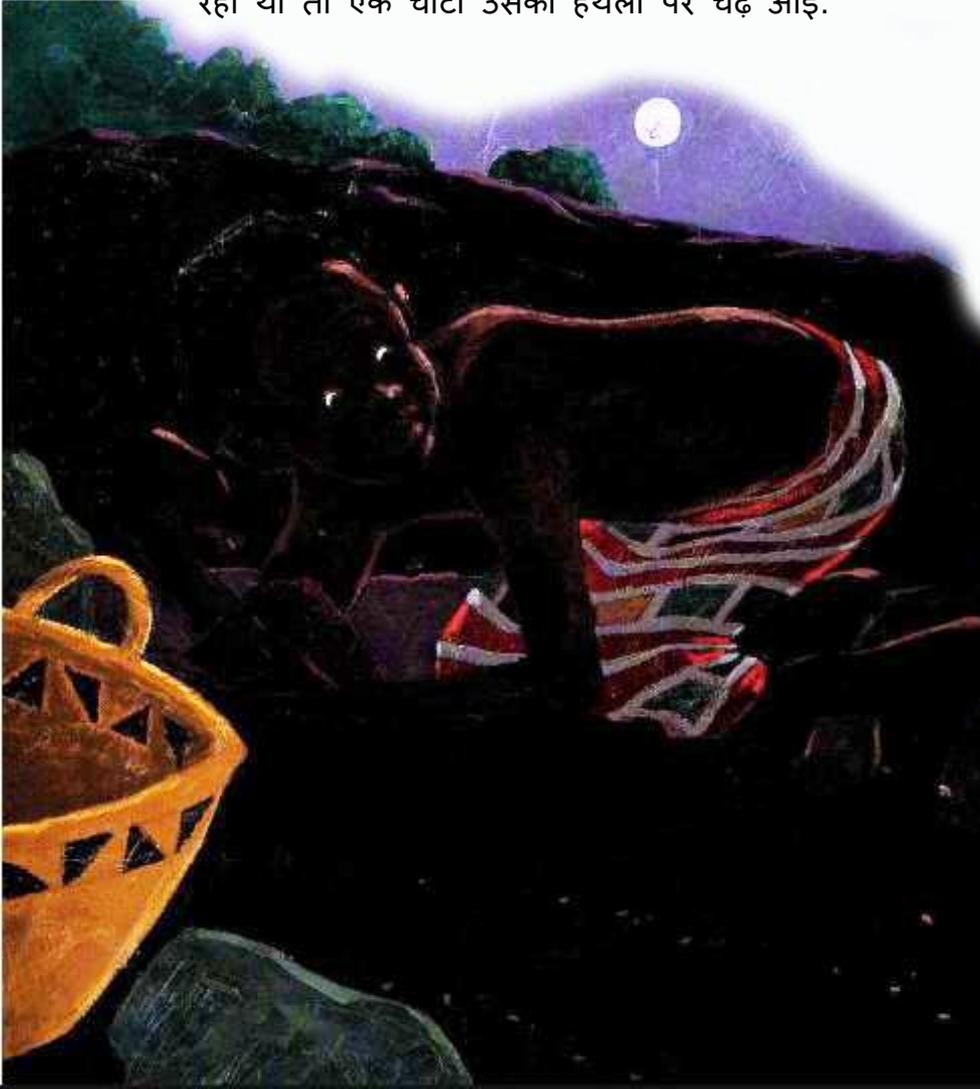
अगली सुबह चीफ फूलिह्कोह्ली ने कॉय को चावलों से भरा टोकरा लिए घर के दरवाज़े पर चुपचाप खड़े पाया. “तुम दुबारा सफल हो गए,” उसने कहा. “लेकिन अभी एक चुनौती बाकी है-सबसे कठिन. और अगर तुम उसे पूरा करने में असफल हुए तो तुम अपनी जान गंवा बैठोगे. मैं अपनी जादुई अँगूठी नदी में फेंकूगा और सुबह होने से पहले तुम्हें इसे ढूँढ़ कर वापस लाना होगा.”

कॉय के कुछ कहने से पहले ही चीफ ने अपनी बड़ी पीतल की अँगूठी उतार कर नदी में दूर फेंक दी, *क्वा-चा.*
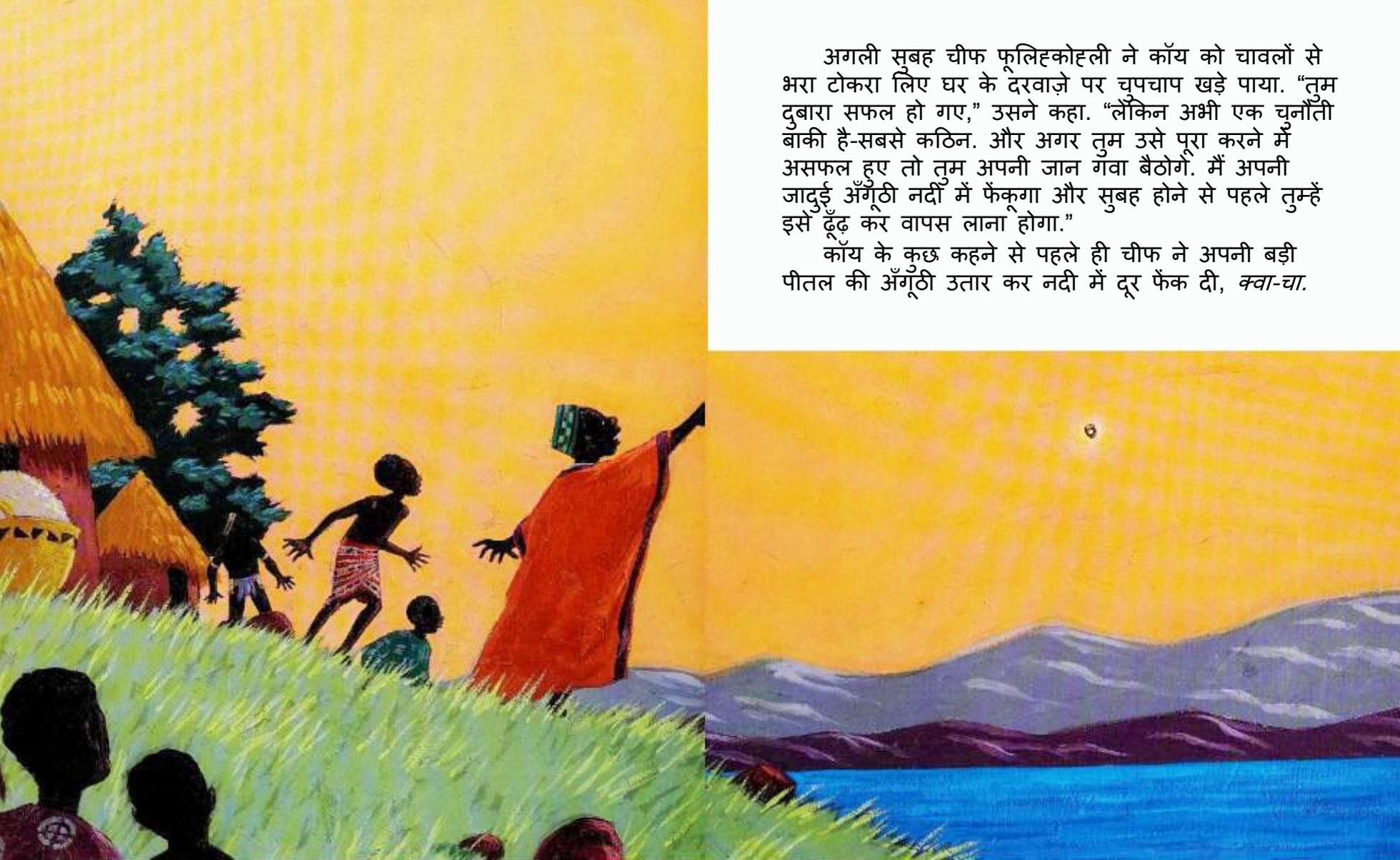
जैसे ही चीफ वापस चला, कॉय ने चिल्ला कर उससे कहा, “मैं तैरना भी नहीं जानता!” फिर वह नदी किनारे बैठ गया और पत्थरों पर तेज़ी से बहती पानी की धारा को देखने लगा. उसे लगा कि धारा कह रही थी, “*यही अंत है, यही अंत है, यही अंत है......*”

शीघ्र ही रात हो गई, आकाश में एक-एक कर तारे चमकने लगे और जल्दी ही सारा आकाश तारों से झिलमिलाने लगा. तारों के उस मध्यम, आलौकिक प्रकाश में उसने एक बड़े मगरमच्छ को अपनी ओर आते देखा.

मगरमच्छ ने उसकी ओर देखा और कहा, "मुझे जानते हो?"

"अरे हाँ," कॉय ने कहा. "लेकिन अब मुझे तुम्हारी मदद चाहिए. इस प्रदेश के चीफ ने अपनी जादुई अँगूठी नदी में फेंक दी है और मुझे सूर्योदय से पहले ही उसे ढूँढ़ कर लाना है अन्यथा मुझे मार दिया जायेगा."

मगरमच्छ ने कहा, "तुम ने मेरी जान बचाई थी. अब तुम्हारी जान बचाने की मेरी बारी है."

सारी रात वह विशाल जीव नदी के तल को छानता रहा और सिर्फ साँस लेने के लिए ही पानी से बाहर आया. जैसे ही क्षितिज पर सूर्य उदय हुआ, अपने एक पंजे में अँगूठी पकड़े, मगरमच्छ नदी से बाहर आया.

सुबह जब चीफ फूलिह्कोह्ली अपनी कुटिया के बाहर आया तो कॉय को जादुई अँगूठी लिए उसकी प्रतीक्षा करते पाया. चीफ ने अँगूठी अपनी अंगुलि पर पहन ली. “कॉय, तुम ने सब कार्य सफलता से पूरे किए,” उसने कहा. “तुम ने मेरी बेटी और मेरा आधा प्रदेश जीत लिया है. अब मैं तुम्हारा नाम चीफ कॉय रखता हूँ.” फिर उसने पुकारा, “फूला, आओ और उस युवक से मिलो जिसके साथ तुम्हारा विवाह होना है.”

उसी पल शाही कुटिया से एक लड़की बाहर आई. इतनी सुंदर लड़की कॉय ने जीवन में पहले कभी न देखी थी. वह उसकी ओर दौड़ी आई क्योंकि जब कॉय उसे जीतने के लिए अपना जीवन दाँव पर लगा रहा था तब दरवाज़े की ओट से वह उसे देखती रही थी और उससे प्यार करने लगी थी.

विवाह समारोह बहुत ही शानदार था. भोज के समय चीफ कॉय ने अपने आप से कहा, "अब मैं समझ गया हूँ: औरों के साथ भलाई करने से भलाई लौट कर आती है-भरपूर मात्रा में.

समाप्त